Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **20.03.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार मसीह मौऊद के आने की निशानियों में से एक बड़ी वैभव शाली निशानी सूरज ग्रहण और चाँद ग्रहण था जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पूरब तथा पश्चिम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में पूरा हुआ। अतः इस प्रकार ग्रहण की निशानी का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत से एक विशेष सम्बंध है।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज यहां सूर्य ग्रहण था। इसी प्रकार कुछ अन्य देशों में भी सूर्य ग्रहण हुआ। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अवसर पर विशेष रूप से दुआओं, इस्तिग़फ़ार, सदक़ा, दान तथा नमाज़ पढ़ने की हिदायत फ़रमाई है। इस लिए जहां जहां भी जमाअत को ग्रहण लगने की ख़बर थी, हिदायत की गई थी कि ग्रहण की नमाज़ अदा करें। हमने भी यहां आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार यह नमाज़ अदा की। हदीसों में अल्लाह तआला के विशिष्ट निशानों में से एक निशान सूर्य तथा चाँद ग्रहण को बताया गया है। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथनानुसार मसीह मौऊद के आने की निशानियों में से एक बड़ी वैभव शाली निशानी सूरज ग्रहण और चाँद ग्रहण था जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पूरब तथा पश्चिम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में पूरा हुआ। अतः इस प्रकार ग्रहण की निशानी का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत से एक विशेष सम्बंध है। आज का यह ग्रहण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के निशान के रूप में तो नहीं कहा जा सकता, जो ग्रहण लगते हैं वे अल्लाह तआला के निशानों में से एक निशान हैं, सम्बंधित तो नहीं किया जा सकता परन्तु यह ग्रहण इस ओर अवश्य ध्यान आकर्षित करता है जो ग्रहण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के निशान के रूप में प्रकट हुआ तथा फिर आज का दिन, इस दिन का ग्रहण इस लिए भी उस निशान की ओर ध्यान आकर्षित करने का कारण है कि आज जुम्अः का दिन है और जुम्अः के दिन को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से भी एक विशेष सम्बंध है। फिर मार्च का महीना होने के कारण ध्यान जाता है क्यूंकि तीन दिन बाद इसी महीने की 23 मार्च को मसीह मौऊद दिवस भी है, दावा भी हुआ। जैसे कि यह महीना, यह दिन और यह ग्रहण विभिन्न दृष्टि कोण से जमाअत के इतिहास को याद दिलाने वाले हैं इस लिए मैं ने जब ग्रहण की नमाज़ के ख़ुत्बः के लिए उद्धरण लिए तो विचार आया कि जुम्अः के ख़ुत्बः में भी ग्रहण के संदर्भ में बात करूं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चाँद सूरज ग्रहण की भविष्य वाणी जो आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई थी, उसके विषय में आपके वृत्तांत पेश करूं अथवा एक आध वृत्तांत पेश करूं तथा इसी प्रकार सहाबा की कुछ घटनाएं भी जिन्होंने इस ग्रहण को देख कर सिलसिले में प्रविष्टि की तथा अपने ईमान को चमकाया। पहले तो मैं, जैसा कि मैं ने कहा कि आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन ग्रहणों को विशेष रूप से बड़ा महत्व दिया है। इस लिए जब एक बार ग्रहण लगा, आपके जीवन में तो इसके सम्बंध में अनेक हदीसें हैं, एक हदीस पेश करता हूँ।

हज़रत असमा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा द्वारा कथित है, वे कहती हैं कि जब सूर्य ग्रहण हुआ तो मैं हज़रत आयशा के पास आई तो देखा कि वे नमाज़ पढ़ रही हैं। मैं ने कहा कि लोगों को क्या हुआ है कि इस समय खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत आयशा ने आकाश की ओर संकेत किया और कहा, सुबहानल्लाह। मैं पूछा कि क्या कोई निशान है, उन्होंने सिर हिलाकर संकेत दिया कि हाँ। इसी प्रकार आपने यह भी फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला के निशानों में से एक निशान है इसका किसी के जीवन या मृत्यु से कोई सम्बंध नहीं है और इसमें दुआ करनी चाहिए तथा इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

अब मैं सूरज ग्रहण की पेशगोई के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वृत्तांत पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि मुझे बड़ा आश्चर्य है कि इसके बावजूद कि निशान पर निशान प्रकट होते जाते हैं परन्तु फिर भी मौलवियों को सत्य स्वीकार करने की ओर ध्यान नहीं। वे यह भी नहीं देखते कि हर क्षेत्र में अल्लाह तआला उनको पराजित करता है और वे बड़ी आकांक्षा करते हैं कि कोई ख़ुदा का समर्थन उनके बारे में भी आ जाए। परन्तु समर्थन के बजाए प्रतिदिन उनकी हीनता तथा उनका असफल होना साबित होता है अर्थात उनका दुर्भाग्य तथा उनकी असफलता साबित होती है। पेशगोई का अपने भावार्थ के अनुसार एक मेहदी का दावा करने वाले का दावा पूरा

हो जाना इस बात पर पूर्ण साक्ष्य है कि जिसके मुंह से ये बातें निकलती थीं उसने सच बोला है लेकिन कितने मानसिक खेद का स्थान है कि आसमान भी उनके विरुद्ध हो गया और ज़मीन की इस समय की स्थिति भी विरुद्ध हो गई। यह कितना उनका अपमान है कि एक ओर आसमान उनके विरुद्ध गवाही दे रहा है तथा एक ओर ज़मीन सलीबी ग़ल्बः के कारण गवाही दे रही है। और एक स्थान पर आपने फ़रमाया कि हमारे लिए सूर्य और चन्द्र ग्रहण का निशान प्रकट हुआ और सैंकड़ों आदमी उसको देख कर हमारी जमाअत में दाख़िल हुए और उस सूर्य व चाँद ग्रहण से हमको प्रसन्नता प्राप्त हुई तथा विरोधियों को ग्लानि। क्या वे क़सम खाकर कहते हैं कि उनका दिल चाहता था कि ऐसे अवसर पर जो हम मेहदी मौऊद का दावा कर रहे हैं सूर्य व चन्द्र ग्रहण हो जाए और पूरे अरब में उसका नाम व निशान न हो और फिर जबकि उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रकट हो गया तो निःसन्देह उनके दिल दुखे होंगे और इसमें अपना अपमान देखते होंगे।

इसके बाद अब मैं कुछ सहाबा की घटनाएं बयान करता हूँ। हज़रत ग़ुलाम मुहम्मद साहब रज़ी0 बयान करते हैं कि विनीत के गाँव में पहले पहल एक साहब मौलवी बदरुद्दीन साहब नामक थे। विनीत मौलवी बदरुद्दीन साहब के घर के सामने उनके पास खड़ा था कि दिन में सूरज को ग्रहण लगा और मौलवी साहब ने फ़रमाया सुबहानल्लाह, मेहदी साहब के निशान प्रकट हो गए और उनके आने का समय आ पहुंचा। कुछ समय बीतने के पश्चात मौलवी साहब अहमदी हो गए। मौलवी साहब बड़े निष्ठावान तथा नेक और सदाचारी थे उन्होंने अपने माता-पिता तथा पत्नि को एक साल का प्रयास करके अहमदी किया।

फिर हाफ़िज़ मुहम्मद हयात साहब आफ़ लालियां, अपना एक निबंध उन्होंने लिखा था लालियां में अहमदियत लिखते हैं 1894 में सूरज और चाँद के निशान को पूरा होने के कारण भी लोगों के दिलों में यह जिज्ञासा पैदा हुई कि इमाम मेहदी प्रकट हो चुके हैं और क़यामत निकट है। रिवायत से पता चलता है कि लोगों के दिलों के घबराहट का भाव विद्यमान था कि अब क्या होगा क़यामत आ पहुंची है। इसी ज़माने में प्रायः उन निशानों का वर्णन था अतः हाफ़िज़ मुहम्मद लखोके ने अपनी किताब अहवाल-ए-आख़िरत में इमाम मेहदी के ज़ाहिर होने के निशानों का अपने पंजाबी कलाम में वर्णन किया था। इसी प्रकार लालियाँ के एक सज्जादह नशीन और सूफ़ी कवि मियां मुहम्मद सिद्दीक़ लाली ने भी इन्हीं निशानों का अपने कलाम में वर्णन किया।

इन निशानों के विषय में घर घर वर्णन होता था और साधारण लोगों को इमाम-ए-वक़्त की तलाश थी। इन प्रस्थितियों में मौलाना ताज महमूद साहब और अन्य कुछ बुज़ुर्गों ने परस्पर विमर्श किया और एक प्रतिनिध मंडल बनाया जो क़ादियान में जाकर मेहदी अलैहिस्सलाम को देखें और सारे निशानों, जो मेहदी मौऊद के सम्बंध में विभिन्न कथनों में हैं उनको पूरा होने का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करें और यदि वे निशान पूरे हों तो उनकी बैअत कर ली जाए। इस ग्रुप में जिन लोगों का चयन हुआ उनमें सर्व प्रथम तीन लोग थे, शेख अमीरुद्दीन साहब, मियां साहब, दीन साहब और मियां मुहम्मद यार साहब। यह ग्रुप पैदल रवाना हुआ। बटाला के निकट पहुंचे तो वहां मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब बटालवी के चेलों ने घेर लिया। उनसे क़ादिया का रास्ता पूछा गया, उन्होंने क़ादियान जाने का कारण पूछा। उद्देश्य की जानकारी होने पर उनके चेलों ने क़ादियान जाने से मना किया और कहा कि जिस व्यक्ति ने मेहदी होने का दावा किया हुआ है वह तो नऊज़ु बिल्लाह, झूठा है। जब ये क़ादियान पहुंचे तो उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ रखते थे, मज्लिस लगी थी हज़रत अक़दस उस समय बात चीत कर रहे थे तथा उनके लोगों के सवालों के जवाब दे रहे थे और साथ ही साथ लिखने में भी व्यस्त थे। यह भी एक निशान था कि आप एक ओर लिख रहे थे, क़लम चल रहा था जैसे कोई प्रोक्ष से निबंध दिल में उतर रहा है और दूसरी ओर मज्लिस में बैठे लोगों से बात चीत फ़रमा रहे हैं, क़लम में कोई रुकावट नहीं आती थी।

तीन दिन तक ये लोग हुज़ूर की सेवा में रहे। हुज़ूर के साथ सैर पर भी जाते रहे। वे निशानियां जो लालियाँ के आलिमों ने बताईं थीं उनका भी निरीक्षण किया, अपनी आँखों से उन निशानों को पूरा होते देखा। अन्ततः वापसी से पहले मस्जिद में उपस्थित होकर हुज़ूर को नबी करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम, जो मेहदी को पहुंचाने का निर्देश था, पेश किया, बैअत का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अभी कुछ दिन और हमारे पास रहें। यह सुनकर शेख़ साहब की आँखों में आँसू आ गए और अपने पाँव आगे करके हुज़ूर को दिखाए और निवेदन किया कि हुज़ूर इतनी लम्बी यात्रा से हमारे पाँव सूज गए हैं। इतनी कठिनाइयां हमने झेली हैं और हमने आपको सच्चा मेहदी पाया है। न जाने यह जीवन साथ दे या न दे, हमारी बैअत स्वीकार करें। अतः फिर वहां मस्जिद मुबारक में उनकी बैअत हुई, दस्ती बैअत।

असदुल्लाह क़ुरैशी साहब, हज़रत क़ाज़ी अकबर साहब रज़ी0 के विषय में लिखते हैं कि हज़रत क़ाज़ी साहब रज़ी0 अहमदियत की गोद में आने से पहले अह्ल-ए-हदीस थे। हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहब जहलमी से सम्बंधित थे। अपने क्षेत्र के इमाम थे। इलाक़े के लोगों की दीनी शिक्षा तथा पठन पाठन में व्यस्त थे कि सूरज ग्रहण व चाँद ग्रहण का निशान आसमान पर प्रकट हुआ। आप इस बात से पहले ही परिचित थे कि इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के प्रकट होने का ज़माना निकट है। सूरज और चन्द्र ग्रहण का वैभव पूर्ण निशान प्रकट होने पर उनके विद्यार्थियों तथा दोस्तों में चर्चा होने लगी। सूरज और चाँद ग्रहण का निशान रमज़ान में प्रकट हुआ तो क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया कि इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के प्रकट होने का निशान तो ज़ाहिर हो गया है हमें उनकी तलाश करनी चाहिए। उन दिनों में चारकोट के लोग सामान ख़रीदने के लिए जेहलम जाया करते थे। क़ाज़ी साहब ने जेहलम आने वाले दोस्तों के हवाले यह

काम किया कि हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहब रज़ी0 से मुलाक़ात करें, उनसे पूछ कर आएं कि यह निशान तो ज़ाहिर हो गया, सूरज चांद ग्रहण का। आप इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के बारे में हमारा मार्ग दर्शन करें। अतः वे लोग हज़रत मौलवी साहब से मिले। हज़रत मौलवी साहब ने कुछ किताबें और एक पत्र हज़रत क़ाज़ी साहब की ओर भेजा। पत्र और किताबों की प्राप्ति से पहले आपने सपने में देखा। किसी ने आपको तीन किताबे पढ़ने के लिए दी हैं। उनमें से पहली किताब पढ़ने के लिए खोली तो उसके अन्दर गन्द भरा हुआ था और दुर्गन्ध आ रही थी। इस पर आपने वह किताब फेंक दी। फिर दो किताबों को देखा कि उनमें से नूर की किरणें निकल रही हैं। हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहब रज़ी0 की भिजवाई हुई किताबों की प्राप्ति पर आपका सपना इस प्रकार पूरा हो गया कि हज़रत मौलवी साहब ने जो किताब आपको भिजवाई थी उनमें एक किताब हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों के खंडन के विषय में थी। आपने पहले उसी को पढ़ना आरम्भ किया। जब उसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में दिल दुखाने वाले शब्द देखे तो उसको पढ़ना छोड़ दिया और दूर फेंक दिया और दूसरी दो किताबें तथा पत्र पढ़े तो उन्हें अपने सपने के अनुसार पाया और आपको अनुसंधान की प्रेरणा हुई। इस प्रकार आपने विश्लेषण के लिए तीन लोगों पर आधारित एक ग्रुप क़ादियान भिजवाया और उन तीनों ने क़ादियान पहुंच कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। जब यह ग्रुप भी बटाला पहुंचा तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने उन्हें रोक लिया। ये तीनो फिर बजाए वापस जाने के, क़ादियान पहुंच गए और वहां आकर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बैअत कर ली। इसके पश्चात क़ाज़ी साहब ने पहले लिखित रूप में बैअत की और फिर क़ादियान पहुंच कर दस्ती बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया।

फिर हज़रत मौलाना अबुल अता साहब जालंधरी के दादा क़ाज़ी मौला बज़्श साहब, तहसील नवां शहर, ज़िला जलंधर के विज़्यात अह्ले-हदीस सज्ज्ञोधन कर्ता थे। जब निशान सूरज और चाँद ग्रहण प्रकट हुआ तो उन्होंने एक ख़ुत्बः में रमज़ानुल मुबारक की तेरह और अट्ठाईस तारीख़ को क्रमानुसार चाँद ग्रहण और फिर सूरज ग्रहण का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए स्पष्ट किया कि यह इमाम मेहदी के प्रकट होने का निशान है। अब हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए कि इमाम मौऊद कब और कहां ज़ाहिर होता है। इस ख़ुत्बः का व्यापक प्रभाव हुआ। अतः मोहतरम क़ाज़ी साहब को अर्थात क़ाज़ी मौला बज़्श साहब को जो मौलाना अबुल अता जालंधरी के दादा थे, इनको यद्यपि स्वंय क़बूल करने की सूरत पैदा न हुई परन्तु इनके बड़े बेटे अर्थात मौलाना अबुल अता साहब के पिता हज़रत मियां इमामुद्दीन साहब को दावा करने वाले के विषय में ज्ञात हुआ और कुछ अध्ययन तथा सोच विचार के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सैय्यद नज़ीर हुसैन साहब बयान फ़रमाते हैं कि जब सूरज और चाँद को ग्रहण लगा तो उस समय मैं अपने घर था। मेरे वालिद साहब यह कह रहे थे कि यह हज़रत मिर्ज़ा साहब की सच्चाई का निशान है। इस बात का मुझ पर प्रभाव पड़ा अतः क़बूल करने की तौफ़ीक़ भी मिली।

सैय्यद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब फ़रमाते हैं कि उस ज़माने में सामान्यतः इस बात का चर्चा था कि मुसलमान नष्ट हो चुके हैं और यह तेरह्वीं शताब्दी का अन्त है। यह वह ज़माना है जिसमें हज़रत इमाम मेहदी तशरीफ़ लाएंगे और उनके बाद हज़रत ईसा भी तशरीफ़ लाएंगे। अतः हज़रत वालिदा साहिबा इस मेहदी व ईसा के आने की चर्चा बड़ी प्रसन्नता से किया करती थीं कि वह ज़माना निकट है। और यह भी वर्णन किया करती थीं कि चाँद ग्रहण और सूरज ग्रहण का होना भी हज़रत मेहदी के ज़माने के सम्बंध में था और वह हो चुका है तो फिर इस प्रकार अल्लाह तआला ने पूरे परिवार को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

हज़रत मिर्ज़ा अय्यूब बेग साहब फ़रमाते थे कि रमज़ान के महीने में चाँद और सूरज ग्रहण लगने की पेशगोई दारक़ुतनी आदि में हदीसों में निशान के रूप में बयान हुई हैं। मार्च 1894 ई0 में पहले चाँद रमज़ान के महीने में गहनाया जब उसी रमज़ान में सूरज को ग्रहण लगने के दिन निकट आए तो दोनों भाई इस इरादे से कि हहज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ये निशान देखें। और चाँद व सूर्य ग्रहण की नमाज़ अदा करें। सप्ताह की शाम को लाहौर से चल कर लगभग ग्यारह बजे रात बटाला पहुंचे। अगले दिन सुबह सवेरे ग्रहण लगना था। शौक देखें अब इनका कितना है, नौजवानों का भी। आंधी चल रही थी बादल गरजते और बिजली चमकती थी। हवा विपरीत दशा में चल रही थी और मिट्टी आँखों में पड़ती थी। पैदल जा रहे थे, बटाला से क़ादियान। क़दम अच्छी प्रकार नहीं उठते थे। रास्ता केवल बिजली की चमक से दिखाई देता था। सबने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो, रातो रात क़ादियान पहुंचना है। अहमदियत तो क़बूल कर चुके थे कसूफ़ (सूर्य ग्रहण) की नमाज़ अदा करना चाहते थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ। अतः तीनों ने रास्ते में खड़े होकर बड़े दर्द के साथ दुआ की, कि ऐ अल्लाह, जो ज़मीन व आसमान का क़ादिर मुतलक ख़ुदा है, हम तेरे विनीत बन्दे हैं, तेरे मसीह के दर्शन के लिए जाते हैं और हम पैदल यात्रा कर रहे हैं, सर्दी है, तू ही हम पर रहम फ़रमा, हमारे लिए रास्ता आसान कर दे और इस बाद-ए-सबा को (विपरीत दशा की हवा) को अर्थात उलटी जो हवा चल रही थी इसको दूर कर। कहते हैं कि अभी दुआ का अन्तिम शब्द निकला ही था कि हवा ने दशा बदली और सामने के बजाए पीछे की ओर से चलने लगी और उनका सफ़र आसान हो गया।

मौलवी ग़ुलाम रसूल साहब बयान फ़रमाते हैं कि 1894 ई0 में जब सूरज और चाँद ग्रहण हुआ उस समय मैं लाहौर में मौलवी हाफ़िज़ अब्दुल मन्नान साहब से तिर्मिज़ी शरीफ़ पढ़ता था। आलिमों की परेशानी और घबराहट ने मेरे दिल पर असर किया। यद्यपि आलिम, लोगों को बचकाना सांतवना दे रहे थे और मेरा दिल हज़रत साहब की सत्यता के विषय में संतुष्ट हो चुका था। परन्तु हदीस की शिक्षा को पूरा करने कारण अमृतसर चला गया और वहां दो तीन साल रह कर हदीस के दौरे से फ़रागत प्राप्त करके मैं दारुल अमान में उपस्थित होकर हज़रत अक़दस की बैअत से लाभान्वित हुआ।

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादिनी बयान फ़रमाते हैं कि 1894 के रमज़ानुल मुबारक में मेहदी आख़िरुज़्ज़माँ के प्रकटन की विज्यात निशानी सूरज और चांद ग्रहण पूरा हो गया। वह दृश्य आजतक मेरी आँखों के सामने है और वे शब्द मेरे कानों में गूंजते सुनाई देते हैं जो हमारे हेड मास्टर मौलवी जमालुद्दीन साहब ने इस निशान के पूरा होने पर मदरसे के कमरे के अन्दर पूरी कक्षा के सामने कहे थे कि मेहदी आख़िरुज़्ज़मां की अब तलाश करनी चाहिए वे अवश्य किसी गुफा में पैदा हो चुके हैं।

दूसरी बात यह मस्तिष्क में आई कि वह घटना इंसान के प्रयास का परिणाम नहीं अपितु आसमान में हुआ जहां इंसान की पहुंच नहीं और न ही इंसान का किसी प्रकार का इसमें हाथ है। तीसरी बात यह आई कि मेहदी अख़िरुज़्ज़मां का व्यक्तित्व, उसका नास्तिकता को मिटाना, इस्लाम को बढ़ाना और इस्लाम का लश्कर तैय्यार करके काफ़िरों को तलवार के घाट उतारना तथा मुसलमानों की विजय की धारणा। चौथी बात यह कि दुआ तथा उसकी वास्तविकता, ख़ुदा का बन्दों की दुआओं को सुनना और क़बूल करना, क्यूंकि उम्मत-ए-मुहम्मदिया के औलिया, मेहदी आख़िरुज़्ज़मां के लिए दुआएं करते रहे हैं, अन्ततः वे क़बूल हुईं। पांचवें यह कि ये बातें इस्लाम की सच्चाई का स्पष्ट प्रमाण हैं और इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो ख़ुदा को प्यारा तथा ख़ुदा तक पहुंचने का माध्यम है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी जिनका नाम हज़रत शेख़ नसीरुद्दीन साहब 1858 ई0 में इसकन्दर पुर ज़िला जालंधर में पैदा हुए, एक सपने के आधार पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अह्ले हदीस पंथ से सम्बंध रखते थे परन्तु मन की शांति नहीं मिली थी। अतः आपने बड़े दर्द के साथ दुआएं शुरु कर दीं कि मौलाए करीम! तू ही मेरा पथ प्रदर्शन फ़रमा। अल्लाह तआला ने मार्ग दर्शन किया, आपने सपने में देखा कि एक बहुत बड़ी बला आप पर हमला करती है परन्तु आपने बन्दूक़ से उस पर फ़ायर किया और वह धुएं की भांति लुप्त हो गई। फिर आप एक ऊँचे स्थान पर मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ में शामिल हो गए। यह सपना आपने एक मौलवी साहब से बयान किया उसने स्वप्न फल बताया कि आप अपने शैतान पर ग़ल्बः प्राप्त कर लेंगे तथा एक नेक जमाअत में शामिल हो जाएंगे। इसी बीच आपने हज़रत मसीह मौऊद के दावे के विषय में सुना और क़ादियान पहुंच कर अपने सपने के अनुसार हालात देख कर बिना किसी असमंजस के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र हाथ पर बैअत कर ली। इसी प्रकार सूरज और चाँद ग्रहण की भविष्य वाणी तथा मौलवी की वे बातें आपके मार्ग दर्शन के लिए प्रेरक हुईं।

अल्लाह तआला दुनिया को भी बुद्धि प्रदान करे और आजकल के जो मुसलमान हैं उनको भी, और इसके बजाए कि ज़माने के इमाम का विरोध करें, आपको मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (तत्पश्चात हुज़ूर अनवर ने अज़ीज़म अहमद यहया बाजवा पुत्र मुकर्रम नईम अहमद बाजवा साहब आफ़ जर्मनी का शुभ वर्णन फ़रमाया जिनकी वफ़ात 11 मार्च 2015 को एक दुर्घटना के कारण हो गई थी। अज़ीज़ मरहूम जामिअः अहमदियः जर्मनी में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए)

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 20.03.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*